Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 1, Jan – 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 15/01/2021 Accepted on : 29/01/2021 Publication Date: 31/01/2021

स्मारक डाक टिकटों पर बौद्ध स्थल

विनय पटेल
कला एवं सौन्दर्यशास्त्र संस्थान, दृश्य कला संकाय, जवाहलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली- 110067.
E-mail: vinaypatelbhu@gmail.com

सारांश : बौद्ध धर्म की विशेषता है अहिंसा परमो धर्मः | बौद्ध धर्म का ईश्वर के विषय में उदासीन होना व हिन्दू धर्म के वर्णाश्रम को नहीं मानना ही इसकी ख्याति को बढ़ाया है | बौद्ध धर्म में मनुष्य को जन्म से नहीं कर्म से मनुष्य की प्रतिष्ठा को जानने पर बल दिया | बौद्ध धर्म के इस विचार से लोग आकर्षित हुए और बौद्ध धर्म का विस्तार होने लगा | आज बौद्ध संस्कृति का जो विस्तार हुआ है उसका मुख्य कारण है हिन्दू धर्म में व्याप्त कुरीतियाँ | जिसमें मनुष्य को मनुष्य न मानकर उनको शोषण की वस्तु मानकर उनके ऊपर किये जा रहे अत्याचार हैं | वर्तमान में भी जब हिन्दू धर्म की विशालता ने सभी स्थलों पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया है फिर भी बौद्ध धर्म लोगों के मध्य आकर्षण का केंद्र बना हुआ है | जिस तरह से हिन्दू धर्म में मंदिरों का निर्माण किया गया उसी प्रकार बौद्ध धर्म में चैत्य, विहार और स्तूपों का निर्माण किया गया | बुद्ध के चिंतन ने मोक्ष के द्वार खोलते हुए सभी व्यक्तियों के लिए जो मार्ग प्रशस्त किया है वही भारतीय संस्कृति की पहचान बना हुआ है | बौद्ध संस्कृति भारतीय संस्कृति के नाम से डाक टिकटों के माध्यम से विदेशों तक पहुंच रही है | प्रस्तुत शोध पत्र में भारत में बौद्ध धर्म की महत्ता के साथ उसके प्रतीकों, स्तूपों एवं स्थलों पर प्रकाश डाला गया है |

शब्द संकेत: बौद्ध धर्म, बौद्ध योग और समाधि, स्तूप-चैत्य, भारतीय संस्कृति, नालंदा, बोधगया, बैशाली, कुशीनगर |

१ भूमिका:

बौद्ध धर्म का उद्भव बिहार में हुआ जबकि इसका विकास अवध, मिर्जापुर, टेहरी गढ़वाल, बलिया और मुजफ्फरनगर तक हुआ | इसके आलावा पंजाव, मध्य प्रदेश, हिमांचल प्रदेश, नेपाल में भी हुआ |[1] बौद्ध धर्म से पूर्व ब्राम्हण वर्ग का कोई मुख्य संगठन न था और न हीं कोई मंदिर था उपासना के लिए |[2] बुद्ध से पूर्व उत्तर भारत की भाषा पालि थी किन्तु संस्कृत भाषा उच्च वर्ग के कुछ लोगों तक सीमित थी | बुद्ध ने पालि भाषा को अपनाया जिससे ब्राम्हणों में बुद्ध के प्रति विरोध उत्पन्न हुआ | बुद्ध ने सारनाथ से बौद्ध धर्म की शुरुआत की |[3] सम्राट अशोक ने बुद्ध धर्म को अपना राजधर्म बनाया | अशोक ने बौद्ध धर्म का प्रचार भारत से बाहर लंका तथा उत्तर पश्चिमी प्रदेशों में किया | बौद्ध धर्म एक ऐसा धर्म है जिसका प्रचार विदेशो में भी हुआ |[4] बुद्ध धर्म का प्रचार उत्तर भारत में मुख्य रूप से हुआ और इसे मान्यता भी मिली तथा इसका वैभव भी बढ़ा | क्योंकि इस क्षेत्र में हिन्दू धर्म के द्वारा सताये हुए लोग ज्यादा थे | हिन्दू धर्म एक विशेष वर्ग के लिए और उनके हितों के लिए ही कार्यकर्त्ता था | हिन्दूओं (ब्राम्हणों) ने अनार्य व् अछूत जातियों पर घोर अत्याचार किया | इस अत्याचार और व्यभिचार से मुक्ति के लिए लोगों ने बौद्ध धर्म को अपनाने के लिए उन्मुक्त हुए |

२ बौद्ध धर्म पतन के कारण :

हिन्दुओं ने बुद्ध को विष्णु का नवम अवतार बताकर बौद्ध जनता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया | दोनों धर्मों में इतनी समानता बढ़ गई कि बौद्ध और हिन्दू दंतकथाओं में भेद करना कठिन हो गया | बौद्ध धर्म के लोगों का वेदों पर अविश्वास होना हिन्दुओं को पसंद न आया | जिससे हिन्दुओं का एक आन्दोलन शुरू हुआ जिसमें बौद्ध धर्म को ध्वस्त करने के

[1] दत्त, डॉ. नलिनाक्ष (1956). *"उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म अक विकास"*; लखनऊ : उत्तर प्रदेश सरकार | पेज 1
[2] ibid.पेज 16
[3] ibid.पेज 20,53
[4]गोविन्ददास, डॉ. (1882). *"भारतीय संस्कृति"*बौद्ध धर्म की उत्पति और उसका प्रचार ; नई दिल्ली : भारत सरकार वैज्ञानिक अनुसन्धान और सांस्कृतिक कार्य मंत्रालय | पेज 20

लिए कुमारिल और उसके बाद शंकराचार्य ने जोर शोर से हिन्दू धर्म का प्रचार किया |[5] बौद्ध धर्म का पतन मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ के देहांत के साथ ही शुरू हुआ | ब्रहद्रथ की हत्याकर पुष्यमित्र मौर्य साम्राज्य का राजा बना | पुष्यमित्र कट्टर सनातनधर्मी और बौद्ध विरोधी था | इसने शुंग वंश की स्थापना कर अश्वमेध यज्ञ की पुनः शुरुआत की | ऐसे ही दक्षिण में सातवाहनों ने भी कई प्रकार के राजसूय यज्ञ आदि की शुरुआत कर हिन्दू धर्म का प्रचार-प्रसार किया | गुप्तवंशी समुद्रगुप्त और वाकाटक वंशियों के समय भी अश्वमेध यज्ञ हुए | इस प्रकार से वैदिक धर्म की उन्नति और बौद्ध धर्म का ह्रास होने लगा |[6] गुप्तकाल को भारतीय इतिहास में स्वर्णकाल माना गया है क्योंकि इस काल में सनातन धर्म का उत्थान और बौद्धधर्म का पतन हुआ था |

३ बौद्ध धर्म की स्थिति :

वैदिक साहित्य से लेकर पौराणिक साहित्य तक भारत में मूर्तिपूजा बौद्ध काल से पहले नहीं थी | राजगृह, कौशाम्बी, काशी, गया, चम्पा में बौद्ध धर्म के अतिरिक्त कोई भी हिन्दू मंदिर नहीं था | जलालाबाद, कंधार और पेशावर में एक हजार बौद्ध संघा रामों के खंडहर में हिन्दू मंदिर विद्यमान थे लेकिन वे बौद्ध धर्म से सम्बंधित थे | बौद्ध धर्म का ज्यादा प्रभाव कश्मीर, पंजाब और कंधार में था | पंजाब के राजा मिहिरकुल ने कंधार पर चढ़ाई कर बौद्ध स्तूपों को नष्ट कर दिया और सिंध के तट पर तीन लाख बौद्धों की हत्या करायी गयी | इस समय मथुरा में भी बौद्ध धर्म का प्रचार था | अयोध्या में बौद्धों के दस संघराम और तीन हजार भिक्षु तथा बहुत से हिन्दू थे | महापुरुषों और महात्माओं की मृत्यु के बाद उनके प्रति सम्मान और श्रद्धा रखने के लिए व उनके आदर्शों को जीवित रखने के लिए उनके चित्रों और प्रतिमूर्तियों का निर्माण किया गया | 7 बौद्ध धर्म के प्रचार के स्वरूप वैदिक देवताओं का लोप शुरू हो गया | बौद्धों ने बुद्ध को ईश्वर माना और उनकी प्रतिमायें बनाना आरम्भ किया और धीरे-धीरे भारत में बुद्ध मूर्तियों की अधिकता हो गयी | जिस समय इस्लाम का प्रचार हुआ उस समय बौद्ध मंदिर और मूर्तियाँ तोड़ी गयी | कालांतर में बुद्ध शब्द 'बुत' के नाम से मुसलमानों में प्रचलित हुआ जो अरबी फारसी भाषा में है | 8 बौद्ध धर्म अवैदिक था जो ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता था | यह प्रकृति और अनुभवों पर आधारित था | बौद्ध धर्म का प्रकृतिक होना ही इसकी विशेषता है |

४ बौद्ध धर्म का उद्देश्य :

बौद्ध धर्म का उद्देश्य निजी अनुभव के सत्य के आधार पर आधारित था | बौद्ध धर्म इन्द्रियानुभाविक और वैज्ञानिक भी था तथा उन कारण कार्यों के संबंधों को प्रकट करना था जो अस्तित्व को व्यवस्थित करते हैं | बौद्धधर्म व्यावहारिक था इसमें समस्याओं का समाधान व्यावहारिक ढंग से किया जाता था | बौद्धधर्म आरोग्यकर था इसमें दुःख और उसके अंत का उपदेश था | बौद्ध धर्म मनोवैज्ञानिक था इसमें मनुष्य की समस्याओं उसके स्वभाव और उसके विकास की गतिशीलता को आरंभ करना था | बौद्ध धर्म लोकतान्त्रिक था | इसमें जातिप्रथा पर प्रहार किया गया | बौद्ध संघ में जाति का कोई भेदभाव नहीं था | बौद्ध धर्म व्यक्तियों की ओर निर्दृष्टि था | इसमें व्यक्ति से कहा गया कि वे अपने ज्ञान की प्राप्ति का मार्ग स्वयं खोजे | 9 बुद्ध धर्म की नीतियाँ जनमानस के लिए लाभप्रद सिद्ध हुई | बौद्ध धर्म किसी विशेष वर्ग के लिए न था अपितु इसमें महिलाओं को भी उचित स्थान दिया |

५ बौद्ध धर्म ग्रन्थ :

बौद्ध साहित्य कई भाषाओँ में लिखी गयी जैसे पालि, संस्कृत, तिब्बतन, चाइनीज, सिंहली, वर्मी आदि | 10 विनयपिटक, त्रिपिटक आदि बुद्धिष्ट ग्रन्थ है | विनयपिटक में प्रथम-द्वितीय संगीतियों (बुद्धिष्ट सम्मेलनों) का निष्कर्ष है | विनयपिटक का उद्देश्य भिक्षु- भिक्षुणियों के नैतिक और आचारगत विधाओं की निर्मिती करना है | विनयपिटक को तीन भागों में विभक्त किया गया है | बौद्धों में दो धाराएँ थी हीनयान और महायान | हीनयान में 'यान' शब्द अर्थ है 'मार्ग' जो वाहन का पर्यायार्थक है | मार्ग और वाहन प्रगति के प्रतीक हैं | इन शब्दों का प्रतीकात्मक रूप में उपयोग वैदिक, जैन और बौद्ध परम्पराओं में देखा गया | 11 बुद्ध ने पालि भाषा को अपनाया और पालि भाषा द्वारा ही जनसमुदाय को संबोधित किया | बुद्ध के सम्यक ज्ञान ने मानव संवेदना को नये पथ की ओर प्रकाशित किया |

[5] ibid.पेज 4
[6] ibid.पेज 5

६ बौद्ध धर्म में चरित, योग और समाधि:

बौद्ध धर्म में आत्मा के स्थान पर संतान शब्द का प्रयोग किया गया है | बौद्ध धर्म में योग का बहुत महत्व है | 12 यहाँ योग शब्द का प्रयोग चित्त चेतसिक क्रियाओं को केन्द्रित करने के अर्थ में हुआ है | जैन संस्कृति में ध्यान के चार प्रकार हैं आर्त, रौद्र, धर्म और शुक्ल | बौद्ध धर्म में समाधि का अर्थ है सैम+ आ+ धान अर्थात मन को एक पदार्थ पर केन्द्रित करना है | समाधि के दो भेद हैं उपचार और अपर्णा | इसके अतिरिक्त समाधि के कुछ भेद और भी मिलते हैं लोकिय और लोकुत्तर | लोकुत्तर का सम्बन्ध निर्वाण से है | जबकि जैन धर्म में समाधि शब्द का उपयोग चित्त की चंचलता पर संयमन करने के अर्थ में हुआ है | 13 व्यक्ति के व्यक्तित्व में छः प्रकार के चरित होते हैं रागचरित, द्वेषचरित, मोहचरित, श्रद्धाचरित, बुद्धिचरित और वितर्क चरित | ये चरित पूर्व कर्मों पर आधारित होते हैं तथा इन्ही के आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित की पहचान की जाती है | सातवीं शताब्दी में हर्ष का साम्राज्य था | हर्ष के बाद बौद्ध धर्म भारत से पतोंन्मुख होने लगा और बौद्ध धर्म का पतन हो गया | जबकि 12वीं शताब्दी तक भारत में बौद्ध धर्म का कुछ प्रभाव बना रहा | जिसमें महाराष्ट्र के संत ज्ञानेश्वर, एकनाथ आदि ने अपनी रचनाओं में बौद्ध धर्म के सिद्धांतों की पृष्ठभूमि में किया | 14 बौद्ध धर्म ने जीव हत्या और कर्मकांड का विरोध किया | जिससे यह हिन्दू धर्म के लिए एक अवरोध के रूप में सामने आया |

७ भारतीय संस्कृति और बौद्ध स्तूप:

भारतीय संस्कृति की परम्पराएँ महान है परन्तु कई ऐसी बाते है जो एक समय और काल विशेष के लिए तो उपयोगी थी, परन्तु आज बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों में उन्हें वैसे लागू करने का प्रयत्न करना प्रगति के लिए अवरोधक है | वर्ण व्यवस्था का एक समय होना स्वाभाविक था | परन्तु उस काल के गुणों का हवाला देते हुए आज के सन्दर्भ में लोगों को दबाया जाना अन्याय है | स्तूप दो प्रकार के होते हैं स्मारक और अस्थि संचायक जो खोखले आकार के हैं | पहले किस्म के स्तूप, ईंट व् पत्थरों से बने ठोस ढांचे थे जो बुद्ध या महावीर के जीवन की किसी घटना के स्मारक में खड़े किये गये थे | दूसरे अस्थि संचायक स्तूप अन्दर से खोखले होते थे जहाँ अवशेष रखे जाते थे |[7] सियाम, वर्मा और कम्बोडिया आदि देशों में अब तक बौद्ध संस्कृति जीवित है |[8] जिस संस्कृति का प्रचार विदेशों में किया जाता है वह वास्तव में बौद्ध संस्कृति हैं किन्तु आज भी इसे भारतीय संस्कृति के रूप में दिखाते हुए हिन्दू संस्कृति का प्रचार किया जाता है |

८ बौद्ध स्थल के डाक टिकट :

भारत में जब आठवां त्रिनाले प्रदर्शनी का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा था उस अवसर पर भारतीय सांस्कृतिक एवं पर्यटन केंद्र इंडिपेक्स-97 (नालंदा, बोधगया, वैशाली, कुशीनगर) में इन स्थलों को शामिल किया गया | जब भारत की स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती मनाई जा रही थी तब नई दिल्ली में प्रगति मैदान में 1997 को, यह प्रदर्शनी आयोजित की गयी | यह एक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी थी जो प्रत्येक दस साल में एक बार आयोजित की जाती है | टिकटों की इस चार श्रृंखला में भारतीय संस्कृति को दिखाने के लिए नालंदा, बोधगया, वैशाली (बिहार) और कुशीनगर (उत्तर प्रदेश) को चित्रित किया गया | नालंदा- इस डाक टिकट में नालंदा विश्विद्यालय के भग्नावशेष को चित्रित किया गया है | यह विश्विद्यालय मठवासीय था जो पांचवीं से ग्यारहवीं शताब्दी तक अपने चरमोत्कर्ष पर था | बोधगया- इस टिकट में बोधि वृक्ष को चित्रित किया गया है | बोधि वृक्ष के नीचे ही बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी | बोधगया में महाबोधि मंदिर भी है जिसे सम्राट अशोक ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में बनवाया था | वैशाली- यह लिच्छवी राजवंश की राजधानी थी | यह नगर मिथिला का प्राचीन शहर है | सम्राट अशोक ने बुद्ध की अंतिम प्रार्थना सभा के स्थल के रूप में इसकी स्मृति में यहाँ एक स्तम्भ का निर्माण कराया टिकट पर इसी स्तूप को दिखाया गया है | कुशीनगर- इसी स्थान पर बुद्ध ने अपना महानिर्वाण प्राप्त किया और अपने शरीर को पञ्चतत्व में विलीन किया | यह स्थल उत्तर प्रदेश में है | ये सभी टिकट स्मारक टिकट हैं जो 6.6.97 को, जारी किये गये | डाक टिकट का मूल्य 200, 600, 1000, 1100 रूपये है | यह बहुरंगीय टिकट हैं | इनमें कोई जलचिन्ह नहीं है | इनकी मुद्रित संख्या पांच लाख, प्रति पत्रक टिकटें दस, और वेध का आकार 13.5X13.5 तथा छपाई तकनीकी फोटोग्रुव्योर है | 17 इस प्रदर्शनी की अवधी 15 से 22 दिसम्बर तक थी | प्रथम दिवस आवरण में वैशाली के अशोक स्तम्भ को दिखाया गया है | निरस्त्रीकरण में बोधगया के

---

[7] उपाध्याय, भगवत शरण (1973). *"भारतीय संस्कृति क स्रोत"*; नई दिल्ली : पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस प्रा. लिमिटेड | पेज 43,44

[8] विद्यालंकार, सत्यकेतु (1991). *"दक्षिण-पूर्वी और दक्षिणी एशिया में भारतीय संस्कृति"*; नई दिल्ली : श्रीसरस्वती सदन, ए-1/32, सफदरजंग इन्क्लेव |

बोधि वृक्ष को अंकित किया गया है | यह टिकट कलकत्ता सेक्युरिटी द्वारा मुद्रित हुआ है | डाक टिकट का आलेख इंडियन सेंटर ऑफ कल्चर एंड टूरिस्म द्वारा रेखांकित है | 18 इन टिकटों पर दिखाया जाने वाला चित्र फोटोग्राफ हैं | कुशीनगर एक व्यापारिक केंद्र था | यह हिरण्यवती नदी के किनारे स्थित है | बुद्धकाल में कुशीनगर का नाम कुशीनारा था और इससे भी पहले इसका नाम कुशावती था | कुशुनगर मल्ल राजाओं की राजधानी थी | यहाँ के मल्ल राजा चैत्यों की पूजा करते थे | जिस प्रकार वैशाली में चापाल चैत्य, उदयन चैत्य, गौतमक चैत्य, सत्तम्ब चैत्य, बहुपुत्र चैत्य और

सानंदन चैत्य था उसी प्रकार कुशीनगर में मुकुटबंधन चैत्य और भोग नगर में आनंद चैत्य था | इनके पास हु देववन, शालवन, अम्ब वन आदि आराम चैत्य थे | कुशीनगर के मल्ल वीर, पराक्रमी, वास्तु विद्या, धनुर्विद्या, शिल्प और उद्योग में अग्रणी थे | सभी मल्ल गदाधारी एवं कुशीनगर के मल्ल क्षत्रिय थे | मल्ल राष्ट्र भारत में एक शक्तिशाली राज्य था | पुष्यमित्र और अजातशत्रु के समय इस जाति को बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ा | संभवतः यह काल गुप्तकाल था और इसी समय मनुवादी विचार धारा का तेज बढ़ा जिसके परिणाम स्वरूप सारे बौद्ध धर्मावलम्बियों को शूद्रों की श्रेणी में रखा गया | बौद्ध प्रधान केंद्र थे अंग, वंग, कलिंग, सौराष्ट्र, मगध आदि | मल्ल बौद्ध होने के करण जातिवाद नहीं मानते थे जिससे जातिवाद शिथिल था | गुप्तकाल के बाद कन्नौज के प्रभुत्व के समय जातियों का भिन्न-भिन्न गुट बनाना प्रारंभ हुआ | बुद्ध के परिनिर्वाण ई.पूर्व 543, के बाद मल्लों ने बुद्ध की धातु में बड़ा स्तूप का निर्माण कराया | पुष्यमित्र शुंग मौर्य सम्राट बृहद्रथ का सेनापति था जिसने शुंगवंश की नीव डाली | कुशीनगर क्षत्रप राजाओं के राज में अनेक विहारों का निर्माण कराया गया था | शको के बाद कुशीनगर पर कुषाणों का अधिकार हुआ | कनिष्क ने अशोक की तरह बौद्ध धर्म की उन्नति की | इन्हीं के समय महायान की सर्वप्रथम संगीति हुई थी | कुषाण वंश के अध्:पतन के बाद उत्तर भारत में गुप्तवंश का उदय हुआ | चन्द्रगुप्त द्वितीय से कुमारगुप्त प्रथम तक विहार, चैत्य मंदिर बनवाये गये | छठी शताब्दी में हूणों के आक्रमण से गुप्तकाल ध्वस्त हो गया और हर्षवर्धन का राज्य हो गया जो बौद्ध उपासक था | उस समय अयोध्या का राजा बालादित्य था जो बौद्ध का कट्टर विरोधी था | राजा शशांक ने भी बोधगया के बोध वृक्ष को खुदवाकर जलवा दिया था | कई चिन्हों को ध्वस्त कर तुड़वा दिया | तेरहवीं सदी के प्रारंभ में नादिरशाह ने बौद्धों का रक्तरंजिश किया | सन 1876 में जब कुशीनगर की खुदाई हुई थी उन साक्ष्यों में प्राप्त जली हुई लकड़ी, जले हुए मानव कंकाल की खोपड़ी, सिक्के और मूर्तियाँ थी | 19 इन स्थलों का महत्व इसलिए भी है क्योंकि यह आज भी बौद्धधर्म के साक्षी हैं और उसकी प्रमाणिकता को चिन्हित करते है | इन स्थलों का महत्त्व पहले भी था और आज भी है जोकि भारतीय संस्कृति की विरासत को संजोये हुए है | इन स्थलों के वजूद ने ही आज भारतीय संस्कृति को भारत में नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व में एक अगल पहचान दिलाई है | जो इसके प्राचीनता को और अधिक पुष्ट बनाती है |

९ उपसंहार :

बौद्ध धर्म विश्वशांति का सूचक है | यह जनसाधारण का था है जिसने मानव को आत्मनिर्भर बनाया | बौद्ध धर्म के ज्ञान दर्शन की सौम्यता ही इसकी प्रसिद्धी का केंद्र रहा है | बौद्ध धर्म व्यक्ति विशेष का न होकर सामान्य लोगों के लिए था | यही कारण रहा है कि आज भी बौद्ध धर्म अपनी स्थिति को बनाये हुए हैं | आज बौद्ध धर्म का विशेष प्रचार प्रसार न होने के कारण उन लोगों की भावनाओं से दूर होता जा रहा है जिसके लिए यह बनाया गया था | किन्तु बौद्ध धर्म ने भारतीय संस्कृति के दर्शन को उच्चतम स्थान दिलाया है, जो आज भी भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर है | इसलिए बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार होते रहना चाहिए जिससे ये पुनः विश्व, राष्ट्र व् समाज में शांति को व्याप्त कर सके और इसका सन्देश पहुँच सके |

चित्र संख्या (1) नालंदा

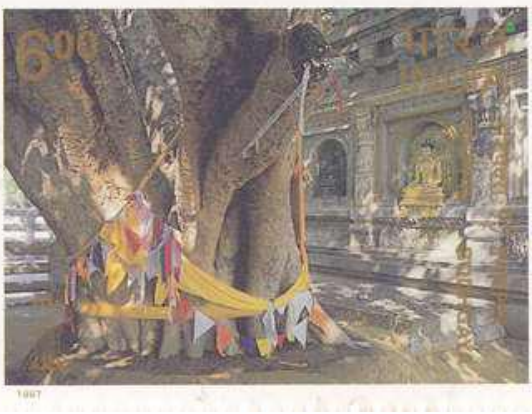

चित्र संख्या (2) बोधगया

चित्र संख्या (3) वैशाली

चित्र संख्या (4) कुशीनगर

सन्दर्भ सूची:

१ भिक्षु, धर्म रक्षित त्रिपिटकाचार्य (2487). *कुशीनगर का इतिहास* ; कुशीनगर बौद्धविहार : देवरिया |
२ विद्यालंकार, सत्यकेतु (1991). *दक्षिण-पूर्वी और दक्षिणी एशिया में भारतीय संस्कृति* : श्री सरस्वती सदन, ए-1/32, सफदरजंग इन्क्लेव नई दिल्ली |
३ उपाध्याय, भगवत शरण (1973). *भारतीय संस्कृति क स्रोत* : पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस प्रा. लिमिटेड : नई दिल्ली |
४ जैन, भास्कर डॉ. भागचन्द्र (1972). *बौद्ध संस्कृति का इतिहास* ; अलोक प्रकाशन : नागपुर |
५ माचवे डॉ. प्रभाकर सचिव और दफ़्तुआर सुरेन्द्र नारायण (1974). *विभिन्न धर्मों में ईश्वर-कल्पना* ; बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी : पटना |
६ वर्मा, सावलिया बिहारी लाल (1974). *भारत में प्रतीक-पूजा का आरंभ और विकास* ; बिहारी हिंदी ग्रन्थ अकादमी : पटना |
७ राजेन्द्र, (2020 वि). *भारत में मूर्तिपूजा* ; आशा प्रेस तिलहरकुंज महेंद्रनगर : अलीगढ़ उत्तर प्रदेश |
८ गोविन्ददास, डॉ. (1882). *भारतीय संस्कृति* ; भारत सरकार वैज्ञानिक अनुसन्धान और सांस्कृतिक कार्य मंत्रालय, बौद्ध धर्म की उत्पति और उसका प्रचार : नई दिल्ली |
९ डॉ. नलिनाक्ष दत्त (1956). *उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास* ; उत्तर प्रदेश सरकार: लखनऊ |
१० यह शोध पत्र मेरे द्वारा लिखित शोध ग्रन्थ *"Representation of identity and cultural politics 0n Indian postage stamp 2017-1947"* के अध्यायों से उद्घृत किया गया है |
११ Design and produced by *Directorate of Advertising & Visual Publicity*, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India; for the Department of post and Printed at Nu Tec Photo lithographers: New Delh-110002.
१२ Ainy, (20, January2014). *Indian Centre of Culture & Tourism* https://www.istampgallery.com/buddhist-cultural-sites/Access: 12/5/2020